रुपेश

ठाकुर प्रसाद पंचाङ्ग

जनवरी 1 2025 JANUARY

विक्रम संवत् 2081	श्रीशालिवाहन शाके 1946	फसली सन् 1432	इस्लामी हिजरी सन् 1446	बंगला संवत् 1431	नेपाली संवत् 1145
पौष शुक्ल 2 से माघ शुक्ल 2 तक। ता.14 से माघ मास प्रारम्भ।	राष्ट्रीय पौष 11 से माघ 11 तक। ता. 21 से माघ मास प्रारम्भ।	प्र. पूस 17 से प्र. माह 18 तक। ता. 14 से प्र. माघ मास प्रारम्भ।	जमादि उस्सानी 30 से साबान 1 तक। ता. 2 से रज्जब व ता. 31 से साबान माह शुरू।	पौष 16 से माघ 17 तक। ता.15 से माघ मास प्रारम्भ।	पौष 17 गते से माघ 18 गते तक। ता.14 से माघ मास प्रारम्भ।

दूध का हिसाब

ता.	सुबह	शाम	ता.	सुबह	शाम
1			17		
2			18		
3			19		
4			20		
5			21		
6			22		
7			23		
8			24		
9			25		
10			26		
11			27		
12			28		
13			29		
14			30		
15			31		
16			योग		

धुलाई का हिसाब

दिनांक	विवरण	कपड़ा	संख्या

अखबार का हिसाब

दिनांक	1	2	3
4	5	6	7
8	9	10	11
12	13	14	15
16	17	18	19
20	21	22	23
24	25	26	27
28	29	30	31

भद्रा-विचार

ता.3 दिन 1:22 से रात 12:37 तक।
ता.6 सायं 6:30 से रा.शे.5:21 तक।
ता.9 रात 10:26 से ता.10 दिन 9:22 तक।
ता.12 रा.शे.4:32 से ता.13 सा.4:7 तक।
ता.16 दिन 3:50 से रात 4:11 तक।
ता.20 दिन 8:50 से रात 9:54 तक।
ता.23 रात 4:1 से ता.24 सायं 4:53 तक।
ता.27 रात 7:21 से ता.28 प्रातः 7:16 तक।

तेजी-मंदी

गेहूँ, चना, जौ, चावल, सूतीवस्त्र गल्ला, रस पदार्थ तथा धातु व सोना-चाँदी में तेजी रहेगी। रूई, तिल, साग-सब्जी मन्दे होंगे।

मूल विचार

ता.6 को रेवती रात 7:36 से ता.8 को अश्विनी सायं 4:17 तक।
ता.15 को श्लेषा दिन 10:50 से ता.17 को मघा दिन 1:6 तक।
ता.24 को ज्येष्ठा रा.शे.5:14 से ता.27 को मूल प्रातः 7:56 तक।

सूर्य नक्षत्र

ता.11 को उ.षा. दिन 9:13 से।
ता.14 को मकर राशि दिन 3:26 से।
ता.24 को श्रवण दिन 10:22 से।

पंचक विचार

ता.3 को दि.12:6 से।
ता.7 को सायं 5:57 तक।

वार					
रवि SUN		पौष शुक्ल षष्ठी रात 8:45 तक **5** मीन चं. दिन 3:32 से, उ.भा. रात 9:11 तक	पौष शुक्ल चतुर्दशी रात 4:32 तक भद्रा **12** मिथुन चं. मृगशिरा दिन 11:7 तक	माघ कृष्ण पंचमी प्रातः 6:55 तक **19** कन्या चं. उ.फा. सायं 5:10 तक	माघ कृष्ण द्वादशी रात 7:3 तक **26** गणतन्त्र दिवस धनु चं. प्रातः 6:49 से, ज्येष्ठा प्रातः 6:49 तक
सोम MON		पौष शुक्ल सप्तमी सायं 6:30 तक भद्रा **6** मीन चं. उ.भा. रात 7:36 तक	पौष शुक्ल पूर्णिमा रात 3:42 तक भद्रा **13** पूर्णिमा कर्क चं. रात 4:30 से, आर्द्रा दिन 10:35 तक	माघ कृष्ण षष्ठी दिन 8:50 तक भद्रा **20** कन्या चं. हस्त रात 7:38 तक	माघ कृष्ण त्रयोदशी रात 7:21 तक भद्रा **27** प्रदोष व्रत धनु चं. मूल प्रातः 7:56 तक
मंगल TUE		पौष शुक्ल अष्टमी सायं 4:11 तक **7** मेष चं. सायं 5:57 से, रेवती सायं 5:57 तक	माघ कृष्ण प्रतिपदा रात 3:20 तक **14** मकर संक्रान्ति खिचड़ी पर्व कर्क चं. पुनर्वसु दिन 10:29 तक	माघ कृष्ण सप्तमी दिन 10:58 तक **21** तुला चं. दिन 8:57 से, चित्रा रात 10:16 तक	माघ कृष्ण चतुर्दशी रात 7:10 तक भद्रा **28** मकर चं. दिन 2:35 से, पू.षा. दिन 8:33 तक
बुध WED	पौष शुक्ल द्वितीया रात 3:11 तक **1** चन्द्रदर्शन मकर चं. प्रा.6:56 से, उ.षा. रात 12:57 तक	पौष शुक्ल नवमी दिन 1:49 तक **8** मेष चं. अश्विनी सायं 4:17 तक	माघ कृष्ण द्वितीया रात 3:29 तक **15** कर्क चं. पुष्य दिन 10:50 तक	माघ कृष्ण अष्टमी दिन 1:8 तक **22** तुला चं. स्वाती रात 12:49 तक	माघ कृष्ण अमावस्या सायं 6:28 तक **29** अमावस्या मकर चं. उ.षा. दिन 8:40 तक
गुरु THU	पौष शुक्ल तृतीया रात 2:6 तक **2** मकर चं. श्रवण रात 12:30 तक	पौष शुक्ल दशमी दिन 11:31 तक भद्रा **9** वृष चं. रात 8:18 से, भरणी दिन 2:39 तक	माघ कृष्ण तृतीया रात 4:11 तक भद्रा **16** सिंह चं. दिन 11:43 से, श्लेषा दिन 11:43 तक	माघ कृष्ण नवमी दिन 3:9 तक भद्रा **23** सुभाष जयन्ती वृश्चिक चं. रात 8:36 से, विशाखा रात 3:12 तक	माघ शुक्ल प्रतिपदा सायं 5:21 तक **30** चन्द्रदर्शन कुम्भ चं. रात 7:59 से, श्रवण दिन 8:21 तक
शुक्र FRI	पौष शुक्ल चतुर्थी रात 12:37 तक भद्रा **3** कुम्भ चं. दिन 12:6 से, धनिष्ठा रात 11:42 तक	पौष शुक्ल एकादशी दिन 9:22 तक भद्रा **10** एकादशी व्रत वृष चं. कृत्तिका दिन 1:13 तक	माघ कृष्ण चतुर्थी रा.शे. 5:18 तक **17** माघ गणेश चतुर्थी व्रत सिंह चं. मघा दिन 1:6 तक	माघ कृष्ण दशमी सायं 4:53 तक भद्रा **24** वृश्चिक चं. अनुराधा रा.शे. 5:14 तक	माघ शुक्ल द्वितीया दिन 3:50 तक **31** कुम्भ चं. धनिष्ठा प्रातः 7:36 तक, शतभिषा रा.शे. 6:32 तक
शनि SAT		पौष शुक्ल पंचमी रात 10:49 तक **4** कुम्भ चं. शतभिषा रात 10:35 तक	पौष शुक्ल द्वादशी प्रातः 7:26 तक, त्रयोदशी रा.शे. 5:49 तक **11** प्रदोष व्रत मिथुन चं. रात 11:34 से, रोहिणी दिन 12:0 तक	माघ कृष्ण पंचमी समस्त **18** कन्या चं. रात 9:30 से, पू.फा. दिन 2:56 तक	माघ कृष्ण एकादशी सायं 6:11 तक **25** एकादशी व्रत वृश्चिक चं. ज्येष्ठा समस्त

विवाह-मुहूर्त ता.16,17,18,19, 20, 21,22,23,24,26।

तारीख	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31
सूर्योदय	6:46	46	46	46	46	45	45	45	44	44	44	43	43	43	42	42	41	41	41	40	40	39	39	38	38	37	36	36	35	35	34
सूर्यास्त	5:14	14	14	14	14	15	15	15	16	16	16	17	17	17	18	18	19	19	19	20	20	21	21	22	22	23	24	24	25	25	26

व्रत-त्यौहार

1.बुध-ईसाई नववर्ष आरम्भ, चन्द्रदर्शन।
3.शुक्र-वैना.गणेश चतुर्थी व्रत।
5.रवि-स्कन्द षष्ठी व्रत, गुरु गोविन्द सिंह जयंती-नवीन मत।
6.सोम-गुरु गोविन्द सिंह जयंती-प्राचीन मत।
10.शुक्र-पुत्रदा एकादशी व्रत-सबका।
11.शनि-शनि प्रदोष व्रत, उ.षा. के सूर्य दिन 9:13।
12.रवि-स्वा.विवेकानन्द जयंती।
13.सोम-स्नान दान व्रत की पूर्णिमा, लोहड़ी-पंजाब, भोगी-द.भा.।
14.मंगल-मकर संक्रांति दिन 3:26 खिचड़ी पर्व पु.काल, खरमास समाप्त, महाकुंभ प्रयाग मेला आरंभ।
16.गुरु-सौभाग्य सुन्दरी तीज व्रत।
17.शुक्र-संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत चं.उ. रात 8:47।
21.मंगल-स्वा.विवेकानन्द जयंती-प्राचीन मत।
23.गुरु-सुभाषचन्द्र बोस जयंती।
24.शुक्र-श्रवण के सूर्य दिन 10:22।
25.शनि-षटतिला एकादशी व्रत।
26.रवि-तिल द्वादशी, गणतन्त्र दिवस।
27.सोम-प्रदोष व्रत, मास शिवरात्रि व्रत, मेरु त्रयोदशी-जैन।
28.मंगल-मु.पर्व शबे मिराज।
29.बुध-स्नान-दान-श्राद्ध की अमावस्या, मौनी अमावस्या, कुंभ पर्व स्नान।
30.गुरु-चन्द्रदर्शन, गुप्त नवरात्रारम्भ।

विस्तृत पर्व-त्यौहार जयन्ती सितम्बर के पृष्ठ पर देखें

राशि-फल

मेष- झगड़ा-विवाद से दूर रहे, खर्च में वृद्धि होगी, मानसिक व्यथा हो सकती है।
वृष- कष्टदायक यात्रा करनी पड़ेगी, व्यवहार में कमी आयेगी।
मिथुन-स्वास्थ्य में बाधा, अधिक खर्च से मानसिक तनाव उत्पन्न होगा।
कर्क- स्वजनों तथा मित्रों से वियोग होगा, शनि के ढैया के कारण शत्रु प्रबल होंगे।
सिंह- स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, महत्त्वपूर्ण कार्यों में अवरोध होगा।
कन्या- कार्यों में बाधा अथवा विलम्ब होगा, व्यर्थ विवाद से अशांति रहेगी।
तुला- आर्थिक स्थिति में सुधार होगा, कृषि क्षेत्र में अच्छा लाभ होगा।
वृश्चिक-शनि की ढैया के कारण संघर्ष करना पड़ेगा, प्रगतिपूर्ण कार्य में विघ्न पड़ेगा।
धनु- यह माह उत्तम रहेगा, व्यवसाय तथा रोजगार में वृद्धि होगी।
मकर- शनि का साढ़े साती का प्रभाव उग्र रहेगा, वाहन दुर्घटना, अनावश्यक विवाद सम्भव।
कुम्भ- शनि की साढ़े साती का प्रभाव रहेगा, स्वास्थ्य संबंधी परेशानी बढ़ेगी।
मीन- इस राशि वालों को हृदय, पर शनि की साढ़े साती का प्रभाव रहेगा।

आकाशी-लक्षण

मासारम्भ में घना कुहरा, पहाड़ों पर वर्फबारी, पूर्व-पश्चिम व दक्षिण प्रान्तों में अच्छी वर्षा, उत्तर भारत व कश्मीर में शीत लहर एवं उ.प्र., बिहार, उत्तराखण्ड कोहरा, धुंध की चपेट में रहेगा। तुषार पाला से फसल की हानि होगी।

दिसम्बर-2024

रवि	1	8	15	22	29
सोम	2	9	16	23	30
मंगल	3	10	17	24	31
बुध	4	11	18		
गुरु	5	12	19	26	
शुक्र	6	13	20	27	
शनि	7	14	21	28	

फरवरी-2025

रवि		2	9	16	23
सोम			10	17	24
मंगल		4	11	18	25
बुध		5		19	
गुरु		6	13	20	27
शुक्र		7	14	21	28
शनि	1	8	15	22	

पंचांग पर अपना नाम छपवाकर बाँटने वाले इच्छुक व्यक्ति (100 प्रति से अधिक) प्रकाशक से सम्पर्क करें 07233013544

पूजा-पाठ, ज्योतिष, तंत्र-मंत्र, वेद-पुराण के प्रकाशक एवं विक्रेता
रूपेश ठाकुर प्रसाद प्रकाशन
कचौड़ीगली, वाराणसी-1
फोन : 2392543, 2392471
E-Mail : rupeshpanchang@gmail.co

स्व० बाबू ठाकुर प्रसाद जी गुप्त

एक परिचय

धर्मप्राण स्वर्गीय बाबू ठाकुर प्रसाद जी गुप्त

औद्योगिक संस्थानों की समुन्नति के सन्दर्भ में जिस प्रकार यशस्वी उद्योगपतियों के नाम अविस्मरणीय हैं, ठीक उसी प्रकार जन-साहित्य के प्रशस्त प्रकाशन से सम्बन्धित विमल व्यवसाय में स्व. बाबू ठाकुर प्रसाद जी गुप्त का नाम शिक्षित-समुदाय के हृदय-पटल पर अंकित है।

भोजपुरी भाषा के सरस प्रकाशन को जन-जन तक पहुँचाने का एक मात्र श्रेय बाबू साहब को ही है। इनके समान सम्पूर्ण भारत का कोई दूसरा भोजपुरी साहित्य का प्रकाशक दृष्टिगोचर नहीं होता। अतः इस सन्दर्भ में स्व० बाबू साहब को यदि भोजपुरी साहित्य का समुद्धारक कहा जाये, तो सम्भवतः कोई अति-शयोक्ति न होगी। व्यावहारिकता, उदारता एवं सौजन्यता की तो आप प्रतिमूर्ति ही थे।

आप अपने पीछे पुत्रों एवं पौत्रों का भरा-पूरा परिवार छोड़ गये। आप ही के पूर्व प्रशिक्षण एवं निर्देशानुसार आपके द्वारा संस्थापित व्यापारिक संस्थान को उत्तराधिकारी कुशलता के साथ संचालित कर रहे हैं। हम इस परिवार तथा संस्थान की सुख-समृद्धि हेतु जगज्जननी माँ से अनवरत प्रार्थना करते हैं।

-सम्पादक

(1)

जन्म जिला आरा शुभ सुन्दर चेवारी ग्राम,
सम्प्रति परिवार काशी धाम में आबाद है।
अग्रवाल कुल के दिवाकर प्रकाशक हैं,
भक्तों में जैसे सुन्दर भक्त प्रह्लाद हैं।
भोजपुरी भाषा के सच्चे समुद्धारक,
दर्शन से जिनके सदा मिटते विषाद हैं।
ऐसे धर्म-प्राण सहकारिता उदारता के,
अमर स्वर्गीय बाबू ठाकुर प्रसाद हैं॥

(2)

धन्य हैं पिताजी बाबू श्रीरामधनी लाल,
जिनके प्रसाद-रूप ठाकुर प्रसाद हैं।
जिनकी प्रथम पत्नी से चार रत्न प्राप्त हुए,
गणेश, पुरुषोत्तम, मुकुन्द और कैलाश हैं।
पत्नी द्वितीया जिनकी उनसे भी चार पुत्र,
द्वारिका, कन्हैया, नारायण, दिनेश हैं।
छोड़ गये पीछे भरा-पूरा परिवार सुन्दर,
पिता के प्रशिक्षण निर्देशन में लीन हैं॥

(3)

ऐसे पितृ-भक्त सभी सेवा-परायण हैं,
ठाकुर प्रसादजी की महिमा दिखाई है।
बड़े-बड़े पण्डित मनीषियों का वरद हस्त,
जिनकी कृपा से आज कीर्ति छवि छायी है।
जब तक रहेंगे सूर्य-चन्द्र नभ-मण्डल में,
तब तक रहेगा नाम बजती बधाई है।
ठाकुर प्रसादजी का सुन्दर परिवार देखि,
हर्षित शिवदेवगण दुन्दुभि बजाई है॥

दोहा

अनुदिन नित बढ़ता रहे, श्री ठाकुर परिवार।
प्रभु से 'श्रीशिवदत्त' यह बिनवत बारहिं बार॥

■

वर्ष में पड़ने वाले विभिन्न योगों के फल

1. सर्वार्थसिद्धि योग—ये समस्त कार्यों के लिए सिद्ध माने गये हैं।
2. अमृत सिद्धि योग—ये वार और नक्षत्र के योग से बनते हैं, ये सभी कार्यों के लिए प्रशस्त हैं किंतु रविवार को पंचमी, सोमवार को षष्ठी, मंगल को सप्तमी, बुधवार को अष्टमी, गुरुवार को नवमी, शुक्रवार को दशमी, शनिवार को एकादशी में ये अमृत सिद्धि योग, "विषयोग" हो जाते हैं।
3. द्विपुष्कर योग—ये भी तिथि-नक्षत्र एवं वार के संयोग से बनते हैं, ये योग लाभ और हानि में दो गुना फल देते हैं।
4. त्रिपुष्कर योग—ये भी द्विपुष्कर के अनुसार बनते हैं तथा लाभ और हानि में तिगुना फल देते हैं।
5. राजयोग—ये भी वार, तिथि, नक्षत्र के योग से बनते हैं। ये धार्मिक, मांगलिक एवं पौष्टिक कार्यों के लिए प्रशस्त माने गये हैं।
6. व्यतिपात योग—ये सभी शुभ कार्यों के लिए वर्जित हैं।
7. रवि योग—यह समस्त कार्यों के लिए प्रशस्त माने गये हैं। ये सूर्य नक्षत्र एवं दैनिक नक्षत्र के योग से बनते हैं।

शुभ कार्यों में वर्जित समय विचार

देवशयन—आषाढ़ शुक्ल 11 से कार्तिक शुक्ल 11 तक देवता शयन करते हैं। इन्हें देवशयन या चातुर्मास कहते हैं, इन दिनों में विवाह, उपनयन, गृहारम्भ, शान्ति, पौष्टिक कर्म, देव-स्थापना आदि का निषेध है।

होलाष्टक—होली से 8 दिन पूर्व (फाल्गुन शुक्ल अष्टमी) से होलाष्टक माना गया है। इसमें कुछ क्षेत्रों में (सतलज, रावी, व्यास नदियों के तथा पुष्कर सरोवर के तटवर्ती भाग में) विवाहादि मांगलिक कार्य वर्जित है। अन्य क्षेत्रों में वर्जित नहीं है।

गुरु एवं शुक्र के अस्त तथा खरमास में वर्जित कार्य—विवाह, मुण्डन (चौल), उपनयन, कर्णछेदन, दीक्षा ग्रहण, गृह प्रवेश, द्विरागमन, वधू प्रवेश, देव प्रतिष्ठा, कुँआ, जलाशय खोदना, चातुर्मास उत्सर्ग इत्यादि कृत्य वर्जित हैं।

भद्रा दोष—विवाह, गृहारम्भ, गृह प्रवेश तथा मांगलिक कार्य वर्जित हैं, पूर्वार्ध दिन की भद्रा रात में तथा उत्तरार्ध की भद्रा दिन में शुभ कार्य के लिए मान्य है।

किस माला से जाप करें

रुद्राक्ष की माला—श्रीगायत्री, श्रीदुर्गा, श्रीशिव जी, श्रीगणेश जी, श्रीकार्तिकेय, पार्वती जी।

तुलसी की माला—श्रीराम, श्रीकृष्ण, सूर्यनारायण, वामन, श्रीनृसिंह जी।

स्फटिक की माला—श्रीदुर्गा जी, श्रीसर-स्वती, श्रीगणेश जी।

सफेद चन्दन की माला—सभी देवी-देवताओं का जाप कर सकते हैं।

लाल चन्दन—श्रीदुर्गा जी।

कमलगट्टे की माला—श्रीलक्ष्मी जी।

हल्दी माला—श्रीबगलामुखी जी।

महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ

1. पूजागृह में दो शिवलिंग, तीन गणेश, दो शङ्ख, दो सूर्य प्रतिमा, तीन देवी प्रतिमा, दो गोमती-चक्र और दो शालिग्राम का पूजन नहीं करना चाहिये।
2. घर में 9 इंच (22 सेंटीमीटर) से छोटी देव-प्रतिमा होनी चाहिये। इससे बड़ी प्रतिमा घर में शुभ नहीं होती है, उसे मंदिर में रखना चाहिये।
3. परिक्रमा देवी की एक बार, सूर्य की सात बार, गणेश की तीन बार, विष्णु की चार बार तथा शिव की आधी परिक्रमा करनी चाहिए।
4. आरती करते समय भगवान् विष्णु के समक्ष बारह बार, सूर्य के समक्ष सात, दुर्गा के समक्ष नौ, शंकर के समक्ष ग्यारह और गणेश के समक्ष चार बार आरती घुमानी चाहिए।
5. पूजा करते समय केवल भूमि पर न बैठें। आसन जरूर बिछावें।
6. शिलान्यास सर्वप्रथम आग्नेय दिशा में होना चाहिये। शेष निर्माण प्रदक्षिण-क्रम से करना चाहिये। मध्याह्न, मध्य रात्रि और सन्ध्याकाल में नींव न रखें।
7. पूर्व, उत्तर और ईशान दिशा में नीची भूमि सबके लिये अत्यंत लाभप्रद होती है। अन्य दिशाओं में नीची भूमि सबके लिये हानिकारक होती है।
8. घर के उत्तर प्लक्ष (पाकड़), पूर्व में वटवृक्ष, दक्षिण में गुलर और पश्चिम में पीपल का वृक्ष शुभप्रद होता है। पेड़ की छाया घर पर नहीं पड़नी चाहिये।
9. ईंट, लोहा, पत्थर, मिट्टी और लकड़ी-ये नये मकान में नये ही लगाने चाहिये। एक मकान की सामग्री को दूसरे मकान में लगाना अत्यंत हानिकारक है।
10. सोने के समय सदा पूर्व अथवा दक्षिण दिशा की ओर सिर रखना चाहिये।
11. प्रतिदिन माथे पर तिलक, चंदन लगाकर ही कार्य के लिये निकलें।

विक्रम संवत् के अनुसार बारह मासों के नाम

1.चैत्र, 2. वैशाख, 3. ज्येष्ठ, 4.आषाढ़, 5. श्रावण, 6. भाद्रपद (भादों), 7.आश्विन (कुवार), 8.कार्तिक, 9. मार्गशीर्ष (अगहन), 10.पौष, 11. माघ, 12.फाल्गुन।

पक्ष क्या है

विक्रम संवत् के हर मास (चंद्रमास) में दो पक्ष होते हैं—

(1) **शुक्ल पक्ष (सुदी)**—अमावस्या के बाद प्रतिपदा से पूर्णिमा तक की तिथियों को शुक्ल पक्ष कहते हैं। यानि अमावस्या के बाद बढ़ता हुआ चन्द्रमा पूर्णिमा तक शुक्ल पक्ष का सूचक है।

(2) **कृष्ण पक्ष (बदी)**—पूर्णिमा के बाद से अमावस्या तक की तिथियों को कृष्ण पक्ष कहते हैं। यानि पूर्णिमा के बाद घटता हुआ चन्द्रमा अमाव- स्या तक कृष्ण पक्ष का सूचक है।

पूरे मास की तिथियों के नाम

(1) प्रतिपदा, (2) द्वितीया, (3) तृतीया, (4) चतुर्थी, (5) पंचमी, (6) षष्ठी, (7) सप्तमी, (8) अष्टमी, (9) नवमी, (10) दशमी, (11) एकादशी, (12) द्वादशी, (13) त्रयोदशी, (14) चतुर्दशी, (15) पूर्णिमा एवं (30) अमावस्या।

नोट—पूर्णिमा के बाद प्रतिपदा से चतुर्दशी तक पूर्वानुसार तिथियों के नाम एवं अंक चलते हैं। अमावस्या को 30 लिखते हैं।

राशियों के आराध्य देव

मेष-श्री गजानन।	**वृष**-कुलस्वामिनी।
मिथुन-कुबेर।	**कर्क**-शंकर जी।
सिंह-सूर्य।	**कन्या**-कुबेर।
तुला-कुलस्वामिनी।	**वृश्चिक**-गणपति।
धनु-दत्तात्रेय।	**मकर**-शनि, हनुमान।
कुंभ-शनि, हनुमान्।	**मीन**-दत्तात्रेय।

राशिबोधक चक्र

मेष	चू	चे	चो	ला	ली	लू	ले	लो	अ
वृष	इ	उ	ए	ओ	वा	वी	वू	वे	वो
मिथुन	का	की	कू	घ	ङ	छ	के	को	हा
कर्क	ही	हू	हे	हो	डा	डी	डू	डे	डो
सिंह	मा	मी	मू	मे	मो	टा	टी	टू	टे
कन्या	टो	पा	पी	पू	ष	ण	ठ	पे	पो
तुला	रा	री	रू	रे	रो	ता	ती	तू	ते
वृश्चिक	तो	ना	नी	नू	ने	नो	या	यी	यू
धनु	ये	यो	भा	भी	भू	धा	फ	ढ	भे
मकर	भो	जा	जी	खी	खू	खे	खो	गा	गी
कुम्भ	गू	गे	गो	सा	सी	सू	से	सो	दा
मीन	दी	दू	थ	झ	ञ	दे	दो	चा	ची

नोट : जिसके नाम के पहले अक्षर जिन वर्गों में मिलेंगे वही उनकी राशि होगी।

स्मार्त एवं वैष्णव

स्मार्त कौन—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, गृहस्थ जो गायत्री की उपासना करते हैं और वेद पुराण धर्मशास्त्र स्मृति को मानने वाले पंचदेवोपासक हैं, ये सभी स्मार्त हैं। पंचदेव विष्णु, शिव, गणेश, शक्ति तथा सूर्य कहलाते हैं।

वैष्णव कौन—जिन लोगों ने वैष्णव गुरु से तप्त मुद्रा द्वारा अपनी भुजा पर शंख, चक्र अंकित करवाये हैं, साधु संन्यासी, विधवा स्त्री, विष्णु उपासक को ही शास्त्र में वैष्णव कहा गया है।

चार अनबूझ मुहूर्त

1. चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, 2. अक्षय तृतीया, 3. दशहरा, 4. दीपावली (सायंकाल के बाद दीप प्रकाश में)। उपरोक्त मुहूर्तों को बोल चाल की भाषा में अनबूझ मुहूर्त कहते हैं। इन मुहूर्तों में कोई भी काम शुरू करने पर विजय प्राप्त होती है। लेकिन विवाह आदि कार्य के लिए पञ्चाङ्ग में दिये मुहूर्तों को ही स्वीकार करें।

- **भगवान् को चढ़ने वाला पूजा अवशेष सामान-गंगा, आदि पवित्र नदियों में नहीं डालना चाहिए। ऐसा करने से वे देवी देवता रुष्ट होते हैं।**
- **भगवती लक्ष्मी आदि देवताओं का वास वहीं होता है जहाँ स्वच्छता व श्रद्धा होती है, अतः अपनी उन्नति व सुख के लिये अपने आस-पास पेड़-पौधे लगायें व सफाई का ध्यान रखें।**
- **व्यापारिक उन्नति** के लिये अपने व्यवसाय **में कुछ नयापन व** गुणवत्ता पर ध्यान दें।
- **किसी भी प्रकार** के सट्टा-जुआ व्यापार व **बेइमानी से पूँजी,** बुद्धि विवेक व व्यापार को **नष्ट कर देता है।**